Scanned with CamScanner
Scanned by CamScanner

14 मसजिद या पुल

सहनशीलता बहुत बड़ा गुण है। कई बार अनुभव भी हमें सहनशील बना देता है और एक खास तरह की दृष्टि देता है। आइए, हम आपको एक ऐसे व्यक्ति से मिलवाते हैं, जो न केवल सहनशील है बल्कि दूसरों के दुख-दर्द को भी समझता है...

महान बादशाह अकबर के स्वागत में जौनपुर के सूबेदार मुबारक खान ने ज़मीन-आसमान एक कर दिया। मुबारक खान बरसों से लगातार बादशाह अकबर को जौनपुर आने के लिए न्योंता देता चला आ रहा था मगर बादशाह के पास बहुत काम रहता था। उस दिन भी बड़ी मुश्किल से उन्हें उधर जाने का मौका मिल पाया था।

सन् 1550 के आसपास की बात है। बादशाह के पास बहुत कम समय था। हाथी की पीठ से उतरकर उन्होंने अभी दो घड़ी आराम भी न किया था कि सूबेदार मुबारक खान बादशाह को गोमती के किनारे दूर-दूर तक फैले उस लंबे-चौड़े मैदान में ले गया, जहाँ मसजिद बनाने की योजना थी। वहाँ जाकर उसने बादशाह को मसजिद का नक्शा दिखाया।

बादशाह ने नक्शे को बहुत ध्यान से देखा। उसे देखकर बादशाह की बाँछें खिल गईं। उन्होंने कहा, "बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है, मुबारक खान! आसमान को चूमने वाली इसकी ऊँची-ऊँची मीनारें, निराले गुंबद, खुला तालाब- सब बेमिसाल है। हमारा खयाल है कि खुदा के लाखों बंदे इसमें बैठकर खुदा से दुआ करेंगे और सुकून पाएँगे।"

शब्दार्थ– न्योता– निमंत्रण, बेमिसाल– जिसकी कोई मिसाल नहीं है, अनोखा, सुकून– चैन

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

"जी आलमपनाह! यह खूबसूरत और बेमिसाल मसजिद दुनियाभर में हुजूर की दीनदारी और गरीबपरस्ती का डंका पीट देगी।" मुबारक खान ने झुककर कहा।

अकबर खुश होकर वहाँ से लौटे। अकबर महान थे। वे हमेशा अपनी प्रजा के सुख-दुख का खयाल रखते थे। वे वेश बदलकर प्रजा के अंदरूनी हालात का पता लगाते रहते थे। उस दिन भी वे शाम होते ही वेश बदलकर गोमती के किनारे घूमने निकले। घूमते-घूमते एक जगह अकबर को किसी औरत के रोने की आवाज़ सुनाई दी। अकबर आवाज़ की ओर चलते हुए गोमती के किनारे नाव के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाव के पास एक अस्सी-नब्बे साल की काली और छोटे कद की बुढ़िया अपनी गठरी थामे पार जाने के लिए खड़ी है और कह रही है, "इस दुष्ट मुंशी को तो देखो, अभी अच्छी तरह दिन भी नहीं छिपा है कि वह दफ़्तर बंद करके यहाँ से भाग गया। जब मुंशी ही नहीं है, तो मल्लाह यहाँ क्यों ठहरेगा? ये कितने बजे आते हैं और कितने बजे जाते हैं, क्या कोई देखने वाला है? सूबेदार मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फ़ुरसत नहीं है। प्रजा मरे या ज़िंदा रहे, इससे उसे क्या! खूबसूरत और शानदार मसजिद बनाकर उसे तो बस बादशाह को खुश करने से मतलब है, जिससे कि उसका ओहदा और बढ़े।"

बुढ़िया थोड़ी देर चुप होकर फिर

Scanned by CamScanner

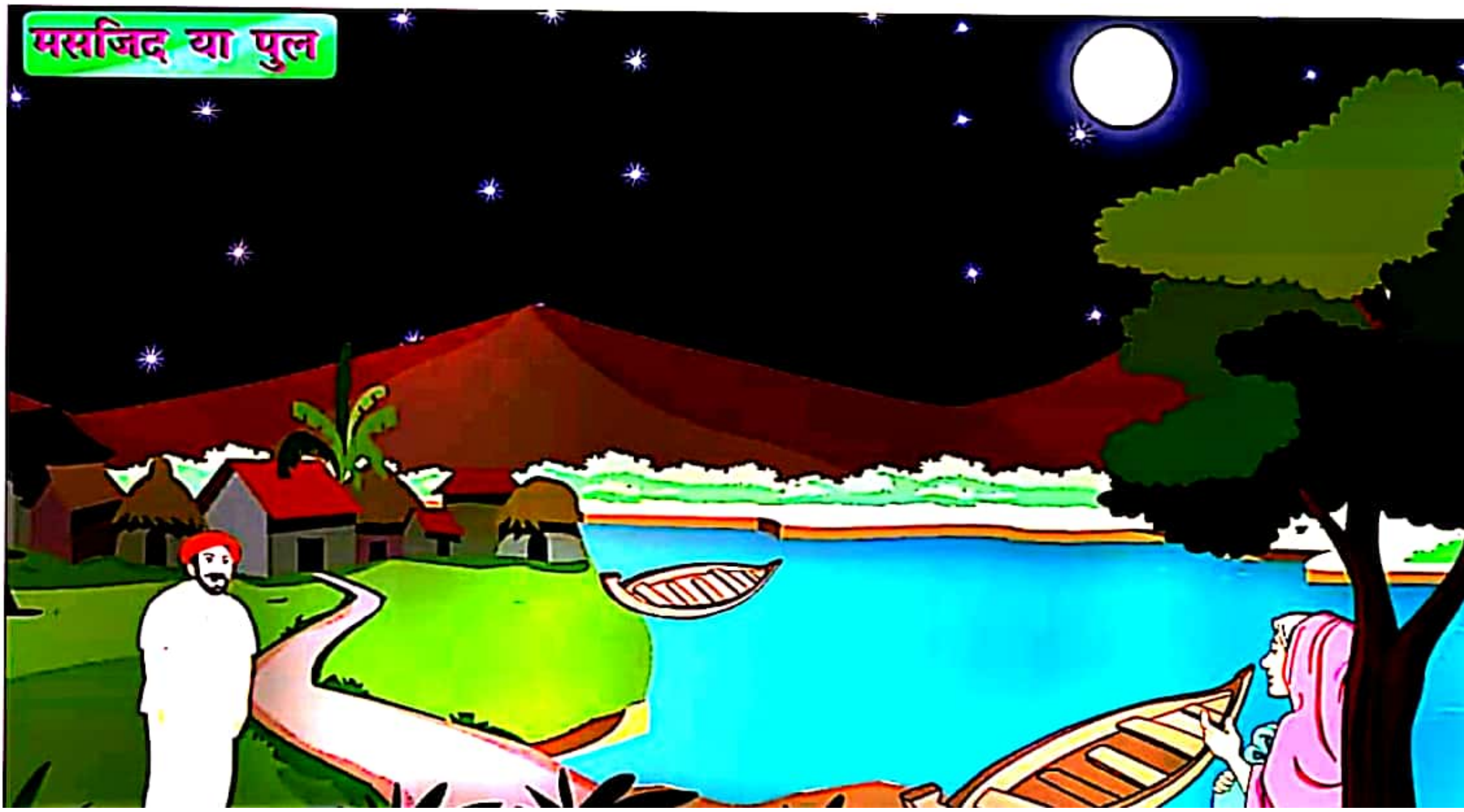

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अकबर बहुत दयालु थे। वे आगे बढ़कर बोले, "रोओ नहीं माई! मैं तुम्हें उस पार पहुँचाए देता हूँ।" बुढ़िया ने रोना बंद कर दिया और बोली, "चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल।"

अकबर ने इससे पहले कभी नाव नहीं खेई थी। बुढ़िया बादशाह के चप्पू पकड़ने के ढंग को देखकर बोली, "अरे! तुझे तो चप्पू भी ठीक से पकड़ने नहीं आते। तू पार क्या ले जाएगा?"

"मैं सँभालकर धीरे-धीरे ले चलूँगा माई, तू घबरा मत!" अकबर ने बुढ़िया को धीरज बँधाया। बुढ़िया के सामने और कोई दूसरा चारा भी नहीं था। मरती क्या न करती! बुढ़िया नाव में बैठ गई।

अकबर जी-जान से नाव खेने लगा। मगर नाव कभी इधर जाती तो कभी उधर। बुढ़िया का पारा ऊपर चढ़ने लगा। वह चिल्लाकर बोली, "अरे अनाड़ी! नाव उलटी ले जा रहा है या सीधी? ऐसे चलाकर तो तू मुझे कल रात तक पार पहुँचाएगा और यह भी पता नहीं कि नाव बीच मँझधार में ही डुबो दे। मेरे बच्चे इंतज़ार कर रहे होंगे और तू है कि नाव लेकर खिलवाड़ कर रहा है!"

"माई! धीरज रखो," बादशाह ने कहा किंतु बुढ़िया बोले जा रही थी, "असल में तो इन सब बातों का जवाबदेह बादशाह ही होता है मगर बादशाह तो मुबारक खान की चिकनी-चुपड़ी बातों से ही खुश हो लेगा। उसे असलियत कौन बताएगा कि यहाँ मसजिद की नहीं, एक पुल की ज़रूरत है। पुल न होने के कारण इस पार से उस पार जाने वाले लोगों को कितनी परेशानी होती है!"

"माई! क्या परेशानी होती है?" अकबर ने पूछा।

"अरे भाई! पुल न होने से उस पार कोई वैद्य या हकीम भी जाने को तैयार नहीं होता।" बुढ़िया फिर चुप हो गई।

थोड़ी देर बाद उसने फिर से बड़बड़ाना शुरू कर दिया, "सूबेदार मुबारक खान हमारा हाकिम है लेकिन उसे यह सब देखने की फ़ुरसत ही कहाँ है। उसे तो बस अपना कर वसूलने से मतलब है। लोग कह रहे हैं कि यहाँ ऐसी मसजिद बनेगी, जो दुनियाभर में अपना सानी आप होगी। सुना है, आज अकबर यहाँ आया है। अगर कहीं वह मुझे मिल जाता, तो मैं उसे बताती कि ओ दुनिया जहान के मालिक बादशाह! अगर तू सचमुच ही लोगों का भला करना चाहता है, तो पहले यहाँ पुल बनवा, मसजिद नहीं।"

शब्दार्थ– नाव खेना– नाव चलाना

Scanned by CamScanner

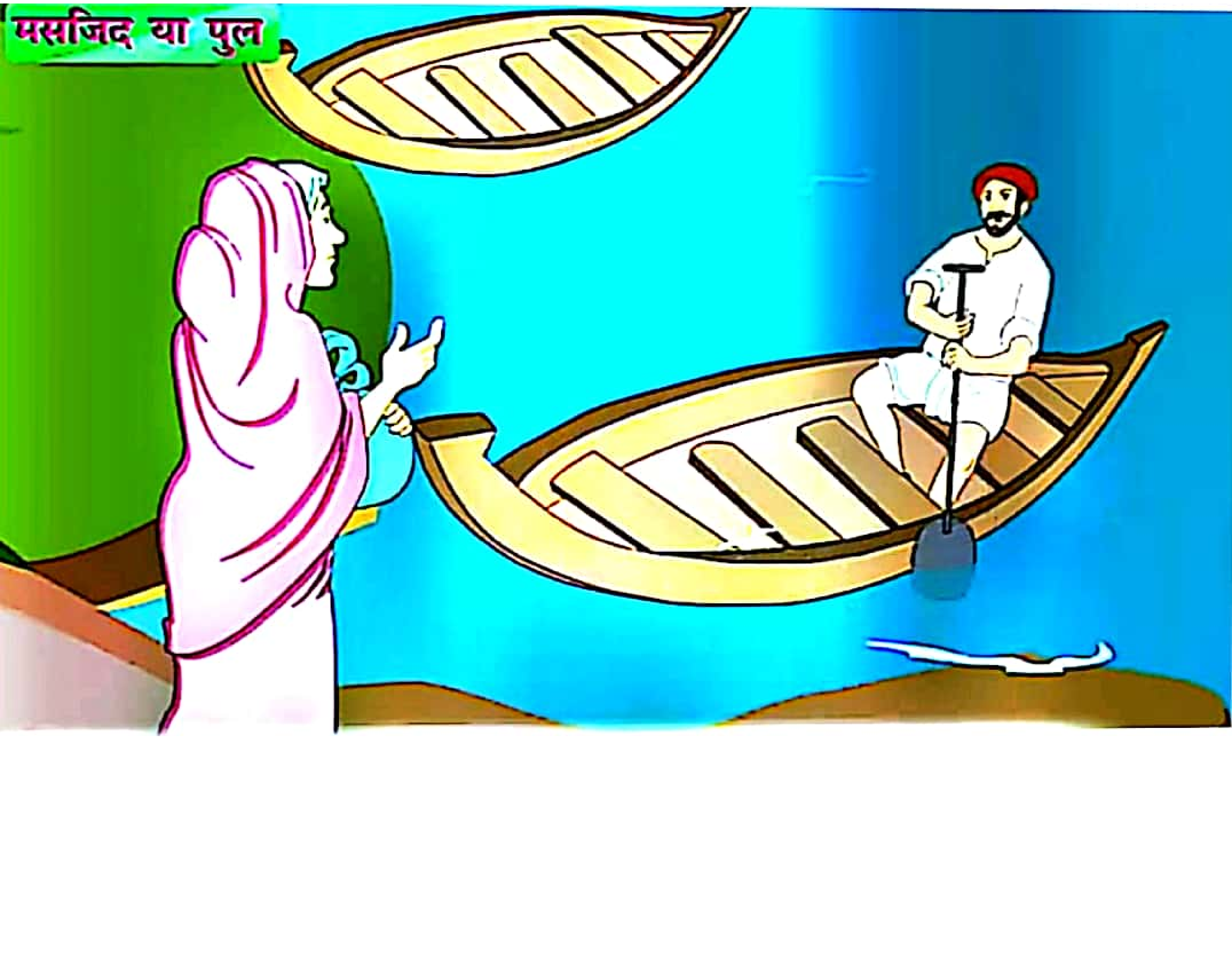

Scanned by CamScanner

बुढ़िया देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। चारों ओर अँधेरा छा गया। आसमान में तारे छिटकने लगे। अंत में नाव किनारे पर पहुँच ही गई। नाव में से लड़खड़ाती हुई बुढ़िया किसी तरह किनारे पर उतरी। अकबर ने उसे सँभालते हुए कहा, "चलो माई, अँधेरा हो गया है। कहीं तुम्हें ठोकर न लग जाए। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ।"

यह कहकर अकबर ने बुढ़िया को उसकी गठरी समेत गोदी में उठा लिया और घर तक ले गया। जब बुढ़िया घर पहुँची तो देखा कि उसके घर में कोहराम मचा था– बच्चे भूख से बिलख-बिलखकर रो रहे थे। उनका रोना देखकर बुढ़िया को मल्लाह पर बड़ा गुस्सा आया। उसने उतरते-उतरते उसके दोनों गालों को जोर से खरोंच दिया और बोली, "आज तूने मेरे बच्चों को भूखा मार डाला!"

पहले तो बादशाह की आँखों में खून उतर आया परंतु उन्होंने अपने को सँभाला और मन में सोचा, 'मुझे तो इस बुढ़िया का अहसानमंद होना चाहिए कि इसने मुझे सच्चाई और असलियत का एक सबक सिखाया है।'

"शुक्रिया!" कहकर बादशाह चुपचाप वहाँ से चले आए।

अगले दिन शीशे में अपने खूबसूरत शाही लिबास और रत्नजड़ित आभूषणों के साथ, अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह मुसकरा दिए। उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया और मसजिद बहुत बाद में।

–सुनीति

मुहावरा– आँखों में खून उतर आना– अत्यधिक क्रोधित होना,

शब्दार्थ– अहसानमंद– अहसान मानने वाला, **सबक**– पाठ

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

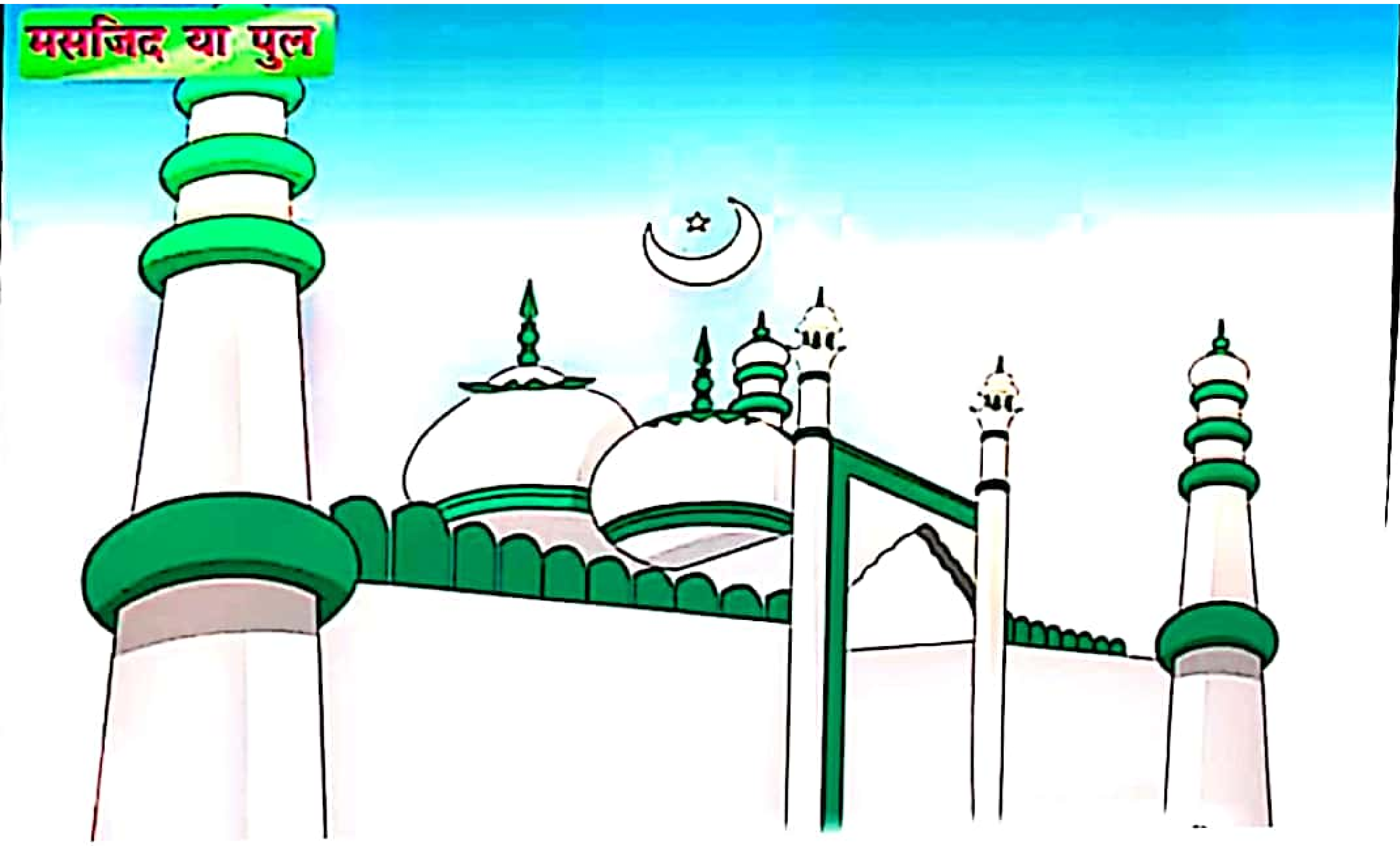

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

"जी आलमपनाह! यह खूबसूरत और बेमिसाल मसजिद दुनियाभर में हुजूर की दीनदारी और गरीबपरस्ती का डंका पीट देगी।" मुबारक खान ने झुककर कहा।

अकबर खुश होकर वहाँ से लौटे। अकबर महान थे। वे हमेशा अपनी प्रजा के सुख-दुख का खयाल रखते थे। वे वेश बदलकर प्रजा के अंदरूनी हालात का पता लगाते रहते थे। उस दिन भी वे शाम होते ही वेश बदलकर गोमती के किनारे घूमने निकले। घूमते-घूमते एक जगह अकबर को किसी औरत के रोने की आवाज़ सुनाई दी। अकबर आवाज़ की ओर चलते हुए गोमती के किनारे नाव के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाव के पास एक अस्सी-नब्बे साल की काली और छोटे कद की बुढ़िया अपनी गठरी थामे पार जाने के लिए खड़ी है और कह रही है, "इस दुष्ट मुंशी को तो देखो, अभी अच्छी तरह दिन भी नहीं छिपा है कि यह दफ़्तर बंद करके यहाँ से भाग गया। जब मुंशी ही नहीं है, तो मल्लाह यहाँ क्यों ठहरेगा? ये कितने बजे आते हैं और कितने बजे जाते हैं, क्या कोई देखने वाला है? सूबेदार मुबारक खान को तो कर वसूलने से ही फ़ुरसत नहीं है। प्रजा मरे या जिंदा रहे, इससे उसे क्या! खूबसूरत और शानदार मसजिद बनाकर उसे तो बस बादशाह को खुश करने से मतलब है, जिससे कि उसका ओहदा और बढ़े।"

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

1. न्योता --- निमंत्रण

2. बेमिसाल --- जिसकी कोई मिसाल नहीं है , अनोखा

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

6. गरीबपरस्त-- गरीबों का रखवाला

7. दफ़्तर-- ऑफ़िस ,कार्यालय

8. मल्लाह-- नाव खेलने वाला

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

3. सुकून -- चैन

4. दीनदारी -- दीनों का हित करने की भावना

5. दीन -- गरीब

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

9. कर -- टैक्स

10. ओहदा -- पद

Scanned by CamScanner

मिट्टी के बर्तन बनाने वाले को कुम्हार कहते हैं।

बुढ़िया थोड़ी देर चुप होकर फिर बोलने लगी, "मुंशी से शिकायत करो, तो कहता है– तुम रो[illegible]-रोज़ पार जाती हो क्यों हो? अरे! पा[illegible] नहीं जाएँगे तो खाएँगे क्या? हमारा कुम्हार का धंधा कैसे चलेगा? गाँव में ग्राहक ही कहाँ मिलेगा भला? फिर क्या [illegible] और [illegible] बच्चों को खिलाएँगे? अरे! मेरी तो [illegible] भी नहीं है जो बच्चों को सँभाल लेती। नन्हे पोते-पोती भूख से बिलख रहे होंगे। हाय अल्लाह! मैं क्या करूँ?" बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

Scanned by CamScanner

बुढ़िया थोड़ी देर चुप होकर फिर बोलने लगी, "मुंशी से शिकायत करो, तो कहता है– तुम रोज़-रोज़ पार जाती ही क्यों हो? अरे! पार नहीं जाएँगे, तो खाएँगे क्या? हमारा कुम्हार का धंधा कैसे चलेगा? गाँव में ग्राहक ही कहाँ मिलेगा भला? फिर क्या खुद खाएँगे और क्या बच्चों को खिलाएँगे? अरे! मेरी तो बहू भी नहीं है, जो बच्चों को सँभाल लेती। नन्हे पोते-पोती भूख से बिलख रहे होंगे। हाय अल्लाह! मैं क्या करूँ?" बुढ़िया ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Made with

मुहावरा

1. आंखों में खून उतर आना -- अत्यधिक क्रोधित होना

Scanned by CamScanner

Made with

11. नाव खेना -- नाव च

12. अहसानमंद -- अहसान मानने

13. सबक -- पाठ

Scanned by CamScanner

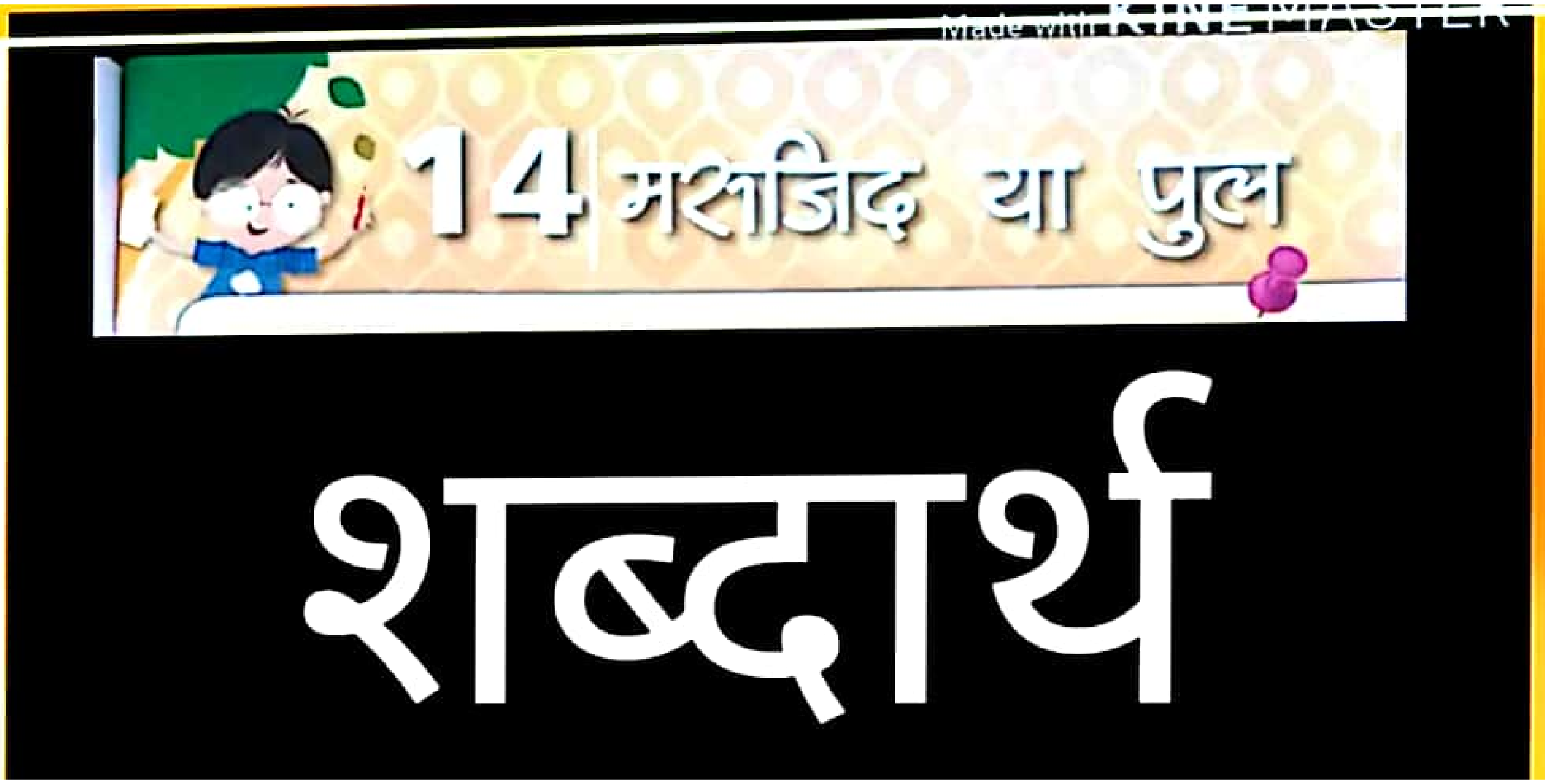

Scanned by CamScanner

नक्शा दिखाया।

बादशाह ने नक्शे को बहुत ध्यान से देखा। उसे देखकर बादशाह की बाँछें खिल गईं। उन्होंने कहा, "बेशक, नक्शा बहुत खूबसूरत है, मुबारक खान! आसमान को चूमने वाली इसकी ऊँची-ऊँची मीनारें, निराले गुंबद, खुला तालाब– सब बेमिसाल है। हमारा खयाल है कि खुदा के लाखों बंदे इसमें बैठकर खुदा से दुआ करेंगे और सुकून पाएँगे।"

Scanned by CamScanner

"जी आलमपनाह! यह खूबसूरत और बेमिसाल मसजिद दुनियाभर में हुज़ूर की दीनदारी और गरीबपरस्ती का डंका पीट देगी।" मुबारक खान ने झुककर कहा।

अकबर खुश होकर वहाँ से लौटे। अकबर महान थे। वे हमेशा अपनी प्रजा के सुख-दुख का खयाल रखते थे। वे वेश बदलकर प्रजा के अंदरूनी हालात का पता लगाते रहते थे। उस दिन भी वे शाम होते ही वेश बदलकर गोमती के किनारे घूमने निकले। घूमते-घूमते एक जगह अकबर को किसी औरत के रोने की आवाज़ सुनाई दी। अकबर आवाज़ की ओर चलते हुए गोमती के किनारे नाव के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि नाव के पास एक अस्सी-नब्बे साल की काली और छोटे कद की बुढ़िया अपनी गठरी थामे पार जाने के लिए खड़ी है और कह रही है, "इस दुष्ट मुंशी को तो देखो, अभी अच्छी तरह दिन भी नहीं छिपा है कि वह दफ़्तर बंद करके यहाँ से भाग गया। जब मुंशी ही नहीं है, तो मल्लाह यहाँ क्यों ठहरेगा? ये कितने बजे आते हैं और कितने बजे जाते हैं, क्या कोई देखने

Made with KINEMASTER

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

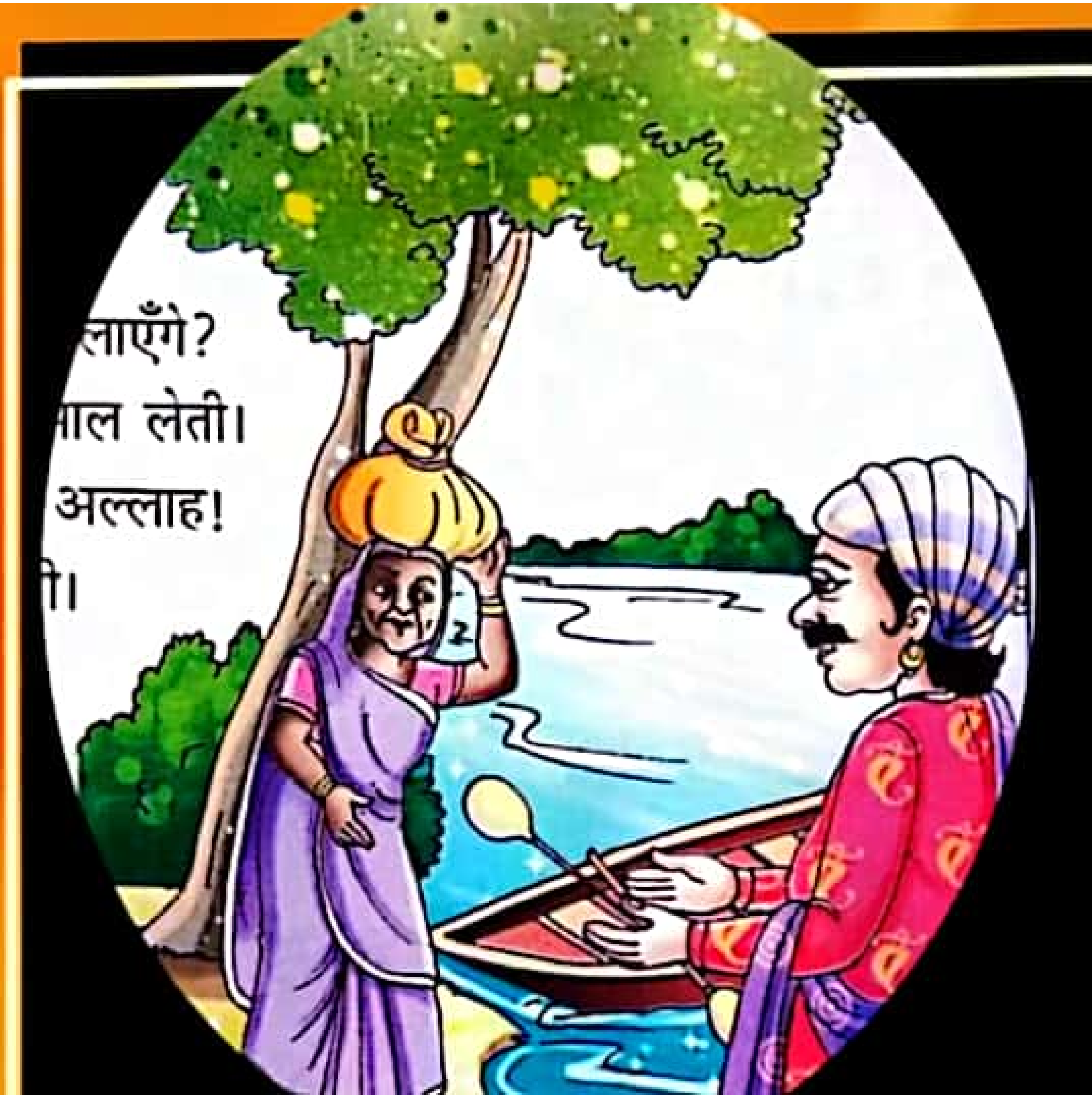

Scanned by CamScanner

सहनशीलता बहुत बड़ा गुण है। कई बार अनुभव भी हमें सहनशील बना देता है और एक खास तरह की दृष्टि देता है। आइए, हम आपको एक ऐसे व्यक्ति से मिलवाते हैं, जो न केवल सहनशील है बल्कि दूसरों के दुख-दर्द को भी समझता है...

Scanned by CamScanner

सहनशीलता बहुत बड़ा गुण है। कई बार अनुभव भी हमें सहनशील बना देता है और एक खास तरह की दृष्टि देता है। आइए, हम आपको एक ऐसे व्यक्ति से मिलवाते हैं, जो न केवल सहनशील है बल्कि दूसरों के दुख-दर्द को भी समझता है...

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अकबर बहुत दयालु थे। वे आगे बढ़कर बोले, "रोओ नहीं माई! मैं तुम्हें उस पार पहुँचाए देता हूँ।" बुढ़िया ने रोना बंद कर दिया और बोली, "चल भाई! तू ही मुझे पार ले चल!"

Made with KINEMASTER

अकबर ने इससे पहले कभी नाव नहीं खेई थी। बुढ़िया बादशाह के चप्पू पकड़ने के ढंग को देखकर बोली, "अरे! तुझे तो चप्पू भी ठीक से पकड़ने नहीं आते। तू पार क्या ले जाएगा?"

"मैं सँभालकर धीरे-धीरे ले चलूँगा माई, तू घबरा मत!" अकबर ने बुढ़िया को धीरज बँधाया। बुढ़िया के सामने और कोई दूसरा चारा भी नहीं था। मरती क्या न करती! बुढ़िया नाव में बैठ गई।

अकबर जी-जान से नाव खेने लगा। मगर नाव कभी इधर जाती तो कभी उधर। बुढ़िया का पारा ऊपर चढ़ने लगा। वह चिल्लाकर बोली, "अरे अनाड़ी! नाव उलटी ले जा रहा है या सीधी? ऐसे चलाकर तो तू मुझे कल रात तक पार पहुँचाएगा और यह भी पता नहीं कि नाव बीच मँझधार में ही डुबो दे। मेरे बच्चे इंतज़ार कर रहे होंगे और तू है कि नाव लेकर खिलवाड़ कर रहा है!"

"माई! धीरज रखो," बादशाह ने कहा किंतु बुढ़िया बोले जा रही थी, "असल में तो इन सब बातों का जवाबदेह बादशाह ही होता है मगर बादशाह तो मुबारक खान की चिकनी-चुपड़ी बातों से ही खुश हो लेगा। उसे असलियत कौन बताएगा कि यहाँ मसजिद की नहीं, एक पुल की ज़रूरत है। पुल न होने के कारण इस पार से उस पार जाने वाले लोगों को कितनी परेशानी होती है!"

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

सन् 1550 के आसपास की बात है। बादशाह के पास बहुत कम समय था। हाथी की पीठ से उतरकर उन्होंने अभी दो घड़ी आराम भी न किया था कि सूबेदार मुबारक खान बादशाह को गोमती के किनारे दूर-दूर तक फैले उस लंबे-चौड़े मैदान में ले गया, जहाँ मसजिद बनाने की योजना थी। वहाँ जाकर उसने बादशाह को मसजिद का नक्शा दिखाया।

बादशाह ने नक्शे को बहुत ध्यान से देखा। उसे देखकर

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

बुढ़िया देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। चारों ओर अँधेरा छा गया। आसमान में छिटकने लगे। अंत में नाव किनारे पर पहुँच ही गई। नाव में से लड़खड़ाती हुई बु किसी तरह किनारे पर उतरी। अकबर ने उसे सँभालते हुए कहा, "चलो माई, अँधेरा गया है। कहीं तुम्हें ठोकर न लग जाए। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ।"

यह कहकर अकबर ने बुढ़िया को उसकी गठरी समेत गोदी में उठा लिया और घर ले गया। जब बुढ़िया घर पहुँची तो देखा कि उसके घर में कोहराम मचा था– बच्चे से बिलख-बिलखकर रो रहे थे। उनका रोना देखकर बुढ़िया को मल्लाह पर बड़ा गु आया। उसने उतरते-उतरते उसके दोनों गालों को ज़ोर से खरोंच दिया और बोली, "अ तूने मेरे बच्चों को भूखा मार डाला!"

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

नाव में बैठ गई।

अकबर जी-जान से नाव खेने लगा। मगर नाव कभी इधर [illegible] बुढ़िया का पारा ऊपर चढ़ने लगा। वह चिल्लाकर बोली, "अरे अनाड़ी! नाव उलटी ले जा रहा है या सीधी? ऐसे चलाकर तो तू मुझे कल रात तक पार पहुँचाएगा और यह भी पता नहीं कि नाव बीच मँझधार में ही डुबो दे। मेरे बच्चे इंतज़ार कर रहे होंगे और तू है कि नाव लेकर खिलवाड़ कर रहा है!"

"माई! धीरज रखो," बादशाह ने कहा किंतु बुढ़िया बोले जा रही थी, "असल में तो इन सब बातों का जवाबदेह बादशाह ही होता है मगर बादशाह तो मुबारक खान की चिकनी-चुपड़ी बातों से ही खुश हो लेगा। उसे असलियत कौन बताएगा कि यहाँ मसजिद की नहीं, एक पुल की ज़रूरत है। पुल न होने के कारण इस पार से उस पार जाने वाले लोगों को कितनी परेशानी होती है!"

"माई! क्या परेशानी होती है?" अकबर ने पूछा।

"अरे भाई! पुल न होने से उस पार कोई वैद्य या हकीम भी जाने को तैयार नहीं होता।" बुढ़िया फिर चुप हो गई।

Made with KINEMASTER

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

अगले दिन शीशे में अपने खूबसूरत शाही लिबास और रत्नजड़ित आभूषणों के साथ, अपने गालों पर खरोंच के निशान देखकर बादशाह मुसकरा दिए। उन्होंने जौनपुर में पहले पुल बनवाया और मसजिद बहुत बाद में।

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

खूबसूरत शाही लिबास और रत्नजड़ित आभूषणों के साथ, अपने गालों पर

Scanned by CamScanner

Made with KINEMASTER

पहले तो बादशाह की आँखों में खून उत
आया परंतु उन्होंने अपने को सँभाला और मन
में सोचा, 'मुझे तो इस बुढ़िया का अहसानमंद
होना चाहिए कि इसने मुझे सच्चाई और
असलियत का एक सबक सिखाया है।'
"शुक्रिया!" कहकर बादशाह चुपचाप
वहाँ से चले आए।

अगले दिन शीशे में अपने
खूबसूरत शाही लिबास और
रत्नजड़ित आभूषणों के
साथ, अपने गालों पर
खरोंच के निशान देखकर

Made with KINEMASTER

बुढ़िया देर तक इसी तरह बड़बड़ाती रही। चारों ओर अँधेरा छा गया। आसमान में छिटकने लगे। अंत में नाव किनारे पर पहुँच ही गई। नाव में से लड़खड़ाती हुई बुि किसी तरह किनारे पर उतरी। अकबर ने उसे सँभालते हुए कहा, "चलो माई, अँधेरा गया है। कहीं तुम्हें ठोकर न लग जाए। मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देता हूँ।"

यह कहकर अकबर ने बुढ़िया को उसकी गठरी समेत गोदी में उठा लिया और घर ले गया। जब बुढ़िया घर पहुँची तो देखा कि उसके घर में कोहराम मचा था– बच्चे से बिलख-बिलखकर रो रहे थे। उनका रोना देखकर बुढ़िया को मल्लाह पर बड़ा गु आया। उसने उतरते-उतरते उसके दोनों गालों को ज़ोर से खरोंच दिया और बोली, "अ तूने मेरे बच्चों को भूखा मार डाला!"

Scanned by CamScanner

6. सही उत्तर चुनकर लिखिए–

बुढ़िया चाहती थी कि गाँव में ....

क. मसजिद बने

ख. पुल बने

ग. उसे काम मिले

घ. वैद्‌य या हकीम की व्यवस्था हो

Scanned by CamScanner

भाषा से

भाषा कौशल– शुद्ध वर्ण-वर्तनी प्रयोग, लिंग परिवर्तन एवं पहचान, शब्द संपदा, काल की पहचान, चयन एवं प्रयोग, भाषा प्रयोग

बात वर्ण की

- **उचित वर्ण लिखकर शब्दों को पूरा कीजिए–**

जौनपुर	मस्जिद	ध्यान	हुनर
बुढ़िया	मल्लाह	बादशाह	दफ़्तर
ओहदा	बच्चे	भूख	मँझधार

बात शब्द की

1. स्त्रीलिंग शब्द लिखिए–

बादशाह	–	बेगम	सूबेदार	–	सूबेदारनी
सम्राट	–	सम्राज्ञी	शेर	–	शेरनी
आदमी	–	औरत	ऊँट	–	ऊँटनी
बूढ़ा	–	बुढ़िया	मोर	–	मोरनी

2. नीचे हिंदी और उर्दू के समानार्थी शब्द लिखे हैं। दोनों को रेखा खींचकर मिलाइए–

आवश्यकता	गुस्सा	प्राण	स्वामी	इंतज़ार	खून	मुश्किल	खूबसूरत	असलियत
क्रोध	जान	ज़रूरत	रक्त	मालिक	सुंदर	प्रतीक्षा	वास्तविकता	कठिनाई

3. नीचे लिखे शब्द-युग्मों को चुनकर सही स्थान पर लिखिए–

हानि-लाभ, रोज़-रोज़, घास-फूस, ज़मीन-आसमान,
उतरते-उतरते, ऊँचा-नीचा, हरे-भरे, पेड़-पौधे, दूर-दूर

पुनरुक्त शब्द-युग्म	विलोम शब्द-युग्म	समानार्थी शब्द-युग्म
दूर-दूर	ज़मीन-आसमान	पेड़-पौधे
रोज़-रोज़	हानि × लाभ	घास-फूस
उतरते-उतरते	ऊँचा × नीचा	हरे-भरे

Scanned by CamScanner

4. निम्नलिखित शब्द स्त्रीलिंग हैं या पुल्लिंग? लिखिए–

बादशाह	पुल्लिंग	बुढ़िया	स्त्रीलिंग
गोमती नदी	स्त्रीलिंग	ओहदा	पुल्लिंग
मैदान	पुल्लिंग	शिकायत	स्त्रीलिंग
मसजिद	स्त्रीलिंग	भूख	स्त्रीलिंग
प्रजा	स्त्रीलिंग	चप्पू	पुल्लिंग

बात वाक्य की

1. **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए–**

- बादशाह के पास कम समय था। ⟶ भूतकाल
- बुढ़िया नदी के पास खड़ी है। ⟶ वर्तमान काल
- सब दुआ करेंगे और सुकून पाएँगे। ⟶ भविष्य काल

निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए–

क. वह देखो, बुढ़िया मिट्टी के खिलौने बेचने जा रही है। वर्तमान काल

ख. बच्चे ये खिलौने खरीदेंगे। भविष्यत काल

ग. हमने भी कल खिलौने खरीदे थे। भूतकाल

2. बुढ़िया ने कहा, "जल्दी-जल्दी चलो।" ⟶ कैसे चलो? ⟶ जल्दी-जल्दी

बच्चे बिलख-बिलखकर रो रहे थे? ⟶ कैसे रो रहे थे? ⟶ बिलख-बिलखकर

रंगीन शब्द चलने और रोने की विशेषता बता रहे हैं। 'चलना' और 'रोना' क्रिया शब्द हैं।

जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन शब्दों को **क्रियाविशेषण** कहते हैं।

3. निम्नलिखित वाक्यों को क्रियाविशेषण शब्द भरकर पूरा कीजिए–

क. बच्चे दौड़ते हुए आए।

ख. बुढ़िया तेज़ी से घर में घुस गई।

ग. मल्लाह धीरे-धीरे नाव चला रहा था।

घ. जानवर कूदता-फाँदता झाड़ियों में जा छिपा।

ङ. बच्चे ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे।

कूदता-फाँदता
दौड़ते हुए
ज़ोर-ज़ोर से
धीरे-धीरे
तेज़ी से

Scanned by CamScanner